इकाई 11 समास प्रकरण – भाग 3

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 समास – "नञ्" सूत्र से "अर्धर्चाः पुंसि च" सूत्रपर्यन्त

11.3 कतिपय उदाहरणों की रूपसाधन–प्रक्रिया

11.4 सारांश

11.5 शब्दावली

11.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

11.0 उददे्श्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आने वाले नञ् समास के विषय में जानेंगे।
- नञ् समास प्रकरण के सूत्रों को विस्तार से उदाहरण के साथ पढेंगे।
- नञ् समास के विभिन्न उदाहरणों को रूपसिद्धि प्रक्रिया के माध्यम से सिद्ध करने में समर्थ हो सकेंगे।
- नञ् समास के प्रवृत्ति निषेधादि के बारे में जानेंगे।
- नञ् तत्पुरुष समास के अन्त में इस प्रकरण से सम्बन्धित समासान्त प्रत्ययों का अध्ययन करेंगे।
- द्वन्द्व व तत्पुरुष में समास का लिङ्गनिर्धारण (परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः इत्यादि सूत्र के माध्यम से) किस प्रकार करना है? इत्यादि ज्ञान प्राप्त करेंगे।

11.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों! आपके पाठ्यक्रमानुसार इस इकाई में आपको समास के बारे में अध्ययन करना है। पूर्व की इकाई में आपने समास के अन्य एक भेद तत्पुरुष समास का तथा उसके विधायक कतिपय सूत्रों का सोदाहरण विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जिसमें आप विशेष रूप से यह जान पाए थे कि तत्पुरुष का विधान द्वितीया से सप्तमीपर्यन्त किया जाता है। तदनन्तर आपने जाना कि तत्पुरुष का ही अन्य एक भेद है कर्मधारय जिसे विशेषण समास या समानाधिकरण समास कहते हैं, इसके अन्तर्गत दोनों समस्यमान पद प्रथमाविभक्त्यन्त होते हैं। उसके पश्चात् आपने यह भी जाना कि कर्मधारय का ही अन्य भेद द्विगु है जो कि संख्यापूर्व होने पर द्विगु समास कहलाता है इसकी ही तत्पुरुषसंज्ञा भी की है जिसका प्रयोजन समासान्तविधान है। पूर्व इकाई में इतना जानने के पश्चात् अब इस इकाई में आप तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आने वाले नञ्

समास के बारे में जानेंगे। यही नञ् समास नञ्-तत्पुरुष के नाम से प्रसिद्ध है। आप नञ् समास के अन्तर्गत आने वाले उदाहरणों की रूपसिद्धि प्रक्रिया को भी करने में समर्थ होंगे। साथ ही तत्पुरुषप्रकरणान्तर्गत समासान्त प्रत्ययों के बारे में भी पढेंगे। इसके अतिरिक्त कतिपय उदाहरणों में समस्त पद की लिङ्गनिर्धारण व्यवस्था के बारे में भी अध्ययन करेंगे।

11.2 समास – "नञ्" सूत्र से "अर्धर्चाः पुंसि च" सूत्रपर्यन्त

सूत्र – नञ् 2.2.6

सूत्रवृत्ति – नञ् सुपा सह समस्यते।

सूत्रानुवाद – नञ् इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है।

व्याख्या – यह एक पदात्मक सूत्र है। 'नञ्' प्रथमान्त पद है। "सह सुपा" सूत्र से सुपा पद की अनुवृत्ति है। "तत्पुरुषः" एवं "समासः" का अधिकार है। इस सूत्र में निषेधार्थक नञ् का ग्रहण है न कि नञ् प्रत्यय का जो "स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ" इत्यादि सूत्र से विहित है। नञ् के ञ् की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर "न" शेष बचता है। यहाँ "न" का ग्रहण नहीं है यद्यपि वह भी निषेधार्थक है और नञ् के अवशिष्ट न के सदृश ही दिखता है। इस प्रकार नञ् सूत्र का फलितार्थ होगा– नञ् (निषेधार्थक) का समर्थ-सुबन्त के साथ समास होता है। यह समास तत्पुरुष का ही एक भेद है।

सूत्र – नलोपो नञः 6.3.73

सूत्रवृत्ति – नञो नस्य लोपः उत्तरपदे। न ब्राह्मणः अब्राह्मणः।

सूत्रानुवाद – उत्तरपद के पर में होने पर नञ् के नकार का लोप होता है।

व्याख्या – नलोपः नञः यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। 'नलोपः' प्रथमान्त पद, 'नञः' षष्ठ्यन्त पद है। यहाँ न लुप्तषष्ठीकपद है। "अलुगुत्तरपदे" सूत्र से उत्तरपद की अनुवृत्ति हुई है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है– नञ् के नकार का उत्तर पद के पर में रहने पर लोप होता है।

उदाहरण – अब्राह्मणः (ब्राह्मण से भिन्न परन्तु क्षत्रिय जैसा) – न ब्राह्मण इस लौकिक विग्रह में न ब्राह्मण सु इस अलौकिक विग्रह में नञ् सूत्र से समास हुआ। प्रातिपदिक संज्ञा, विभक्ति का लुक् करके न ब्राह्मण बना। प्रथमा निर्दिष्ट न की उपसर्जन संज्ञा और उसका पूर्व निपात। नलोपो नञः इस सूत्र से ब्राह्मण पद उत्तर पद में होने के कारण न के नकार का लोप हुआ, स्थिति हुई अ ब्राह्मण– अब्राह्मण। एकदेशविकृतन्यायेन अब्राह्मण को प्रातिपदिक मानकर स्वादि प्रत्ययों के विधानोत्तर अब्राह्मणः रूप सिद्ध हुआ। यद्यपि यहाँ निषेध हुआ है तथापि तत्पुरुष समास होने के कारण उत्तर पद की ही प्रधानता होती है।

सूत्र – तस्मान्नुडचि 6.3.74

सूत्रवृत्ति – लुप्तनकारात् नञः उत्तरपदस्याजादे 'नुट्' आगमः स्यात्। अनश्वः। नैकधा इयादौ तु न शब्देन सह सुप्सुपेति समासः।

सूत्रानुवाद – नञ् सम्बन्धी नकार का लोप होने पर उससे परवर्ती अजादि उत्तर पद को नुट् आगम होता है।

व्याख्या – तस्मात्, नुट्, अचि यह पदच्छेद है। यह त्रिपदात्मक सूत्र है। 'तस्मात्' पञ्चम्यन्त पद, 'नुट्' प्रथमान्त पद, 'अचि' सप्तम्यन्त पद। नलोपो नञः सूत्र से नञः तथा अलुगुत्तरपदे सूत्र से उत्तरपद की अनुवृत्ति होती है। "यस्मिन्विधिः०" परिभाषा से अचि में तदादि विधि हो जाती है उत्तर पद का विशेषण होने के कारण। इस प्रकार अजादौ उत्तरपदे अर्थ मिलता है। तस्मात् पद से "नलोपो नञः" सूत्र के द्वारा लुप्त नकार का परामर्श होता है सर्वनाम्नः पूर्वपरामर्शित्वात्। अतः "तस्मादित्युत्तरस्य" परिभाषासूत्र द्वारा नञ् से पर को नुट् आगम प्राप्त हुआ और "तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य" परिभाषासूत्र के द्वारा अच् से अव्यवहित पूर्व को आगम प्राप्त हुआ, इस अवस्था में आगम किसको हो इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होती है तब "उभयनिर्देशे पञ्चमीनिर्देशो बलीयान्" परिभाषा के द्वारा पंचमी निर्देश की बलवत्ता सिद्ध हुई इस प्रकार से नञ् से पर को नुट् आगम होगा अर्थात् पर में विद्यमान अच् को। नुट् आगम टित् होने के कारण "आद्यन्तौ टकितौ" सूत्र से अजादि उत्तर पद का आद्यवयव के रूप में होगा। नैकधा इत्यादि में न शब्द के साथ समास है न कि नञ् के साथ अतः वहाँ पर "नलोपो नञः" तथा "तस्मान्नुडचि" इन दोनों सूत्रों की प्रवृत्ति नहीं होती है अतः नैकधा में सुप्सुपा समास होता है।

उदाहरण – **अनश्वः** (घोड़े से भिन्न) – न अश्वः इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा न अश्व सु में "नञ्" सूत्र से समास करने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा विभक्ति लुक् करने पर न अश्व इस अवस्था में न की "प्रथमा निर्दिष्टे समास उपसर्जनम्" के द्वारा उपसर्जन संज्ञा होने पर "उपसर्जनं पूर्वम्" से पूर्व निपात होने पर न अश्व होने पर "नलोपो नञः" से न के न् का लोप होने पर अ अश्व इस स्थिति में "तस्मान्नुडचि" के द्वारा अश्व को नुट् आगम होने पर नुट् का अनुबन्ध लोप होने पर अश्व के आद्यवयव के रूप में आगम होने पर अ न् अश्व होने पर वर्णसम्मेलन करने से अनश्व रूप बना। इस अवस्था में एकदेशविकृतन्यायेन अनश्व को प्रातिपदिक मानकर स्वादि प्रत्ययों के विधानोत्तर अनश्वः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – कुगतिप्रादयः 2.2.18

सूत्रवृत्ति – एते समर्थेन नित्यं समस्यन्ते। कुत्सितः पुरुषः कुपुरुषः।

सूत्रानुवाद – कु-शब्द, गतिसंज्ञक शब्द और प्र आदि का समर्थ सुबन्त शब्दों से नित्य समास होता है।

व्याख्या – प्र आदौ येषां ते प्रादयः। कुश्च गतिश्च प्रादयश्च तेषाम् इतरेतर द्वन्द्वः कुगतिप्रादयः। एकपदात्मकं सूत्रमिदम्। कुगतिप्रादयः प्रथमान्तं पदम्। "नित्यं क्रीडाजीविकयोः" सूत्र से नित्यम् पद की अनुवृत्ति। गति तथा प्रादि के साथ कु का पाठ होने के कारण कु भी यहाँ कुत्सितवाचक निपात ही गृहीत है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि कु (कुत्सितवाचक निपात), गतिसंज्ञक शब्द तथा च प्र आदि शब्द समर्थ सुबन्त के साथ मिलकर नित्य समास करते हैं।

उदाहरण – कुपुरुषः (निन्दित पुरुष) – कुत्सितः पुरुषः इस लौकिकविग्रह वाक्य में तथा कु पुरुष सु इस अलौकिक विग्रह वाक्य में "कुगतिप्रादयः" सूत्र से समास करने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा विभक्ति लुक् करने पर कुपुरुष होने पर कु की उपसर्जन संज्ञा तथा पूर्व निपात करने पर कुपुरुष रूप बना। इस अवस्था में एकदेशविकृतन्यायेन से कुपुरुष को प्रातिपदिक मानकर स्वादि प्रत्ययों के विधानोत्तर कुपुरुषः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – ऊर्यादिच्विडाचश्च 1.4.61

सूत्रवृत्ति – ऊर्यादयः च्व्यन्ताः, डाजन्ताश्च क्रियायोगे गतिसंज्ञाः स्युः। ऊरीकृत्य। शुक्लीकृत्य। पटपटाकृत्य। सुपुरुषः। (प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया।) प्रगतः आचार्यः प्राचार्यः। (अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया।) अतिक्रान्तो मालामिति विग्रहे –

सूत्रानुवाद – ऊरी आदि शब्द, च्वि प्रत्ययान्त शब्द तथा डाच् प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में "गति" संज्ञक होते हैं।

व्याख्या – ऊरी आदिर्येषां ते ऊर्यादयः। ऊर्यादयश्च च्विश्च डाच् च् तेषामितरेतरद्वन्द्व ऊर्यादिच्विडाचः। ऊर्यादिच्विडाचः च यह पदच्छेद है। 'ऊर्यादिच्विडाचः' प्रथमान्त पद, च अव्यय। उपसर्गाः क्रियायोगे से क्रियायोगे की अनुवृत्ति तथा गतिश्च सूत्र से वचनपरिणाम करके गतयः पद की अनुवृत्ति हुई। "प्रत्ययग्रहणे तदन्ताः ग्राह्याः" परिभाषा के द्वारा च्वि-प्रत्ययान्त तथा डाच्-प्रत्ययान्त अर्थ प्राप्त हुआ है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है ऊरी आदि गणपठित शब्द, च्वि-प्रत्ययान्त शब्द और डाच्-प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में गतिसंज्ञक होते हैं। गतिसंज्ञा होने के पश्चात् "कुगतिप्रादयः" सूत्र से समास हो जाता है।

उदाहरण – ऊरीकृत्य (स्वीकार करके) – ऊरी कृत्वा इस अलौकिक तथा लौकिक विग्रह वाक्य में "ऊर्यादिच्विडाचश्च" सूत्र के द्वारा गति संज्ञा करने पर "कुगतिप्रादयः" सूत्र से समास हो जाता है। तदनन्तर प्रातिपदिकसंज्ञा करने पर ऊरीकृत्वा बन जाता है। तत्पश्चात् कृदन्तकार्य होकर क्त्वा के स्थान पर ल्यप् तथा च तुगागम होकर ऊरीकृत्य हो जाता है। सुबादि कार्य होने पर अव्ययत्वात् सुप् का लुक् करने पर ऊरीकृत्य रूप सिद्ध हो जाता है।

(वा.) "प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया – प्र, परा आदि का प्रथमान्त सुबन्त के साथ "गत" आदि अर्थों में समास होता है। उदाहरण– प्रगतः आचार्यः प्राचार्यः।

(वा.) "अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया" – "क्रान्त" आदि अर्थों में अति आदि निपातों का द्वितीयान्त समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। अतिक्रान्तो मालाम् इस स्थिति में

सूत्र – एकविभक्ति चापूर्वनिपाते 1.2.44

सूत्रवृत्ति – विग्रहे यन्नियतविभक्तिकं तदुपसर्जनसंज्ञं स्याद् न तु तस्य पूर्वनिपातः।

सूत्रानुवाद – विग्रह वाक्य में जो नियत विभक्त्यन्त पद हो, उसकी "उपसर्जन" संज्ञा होती है किन्तु उसका पूर्व निपात नहीं होता है।

व्याख्या – एका विभक्तिः यस्य तद् एकविभक्ति, बहुव्रीहिः। पूर्वश्चासौ निपातश्चेति पूर्वनिपातः, कर्मधारयः। न पूर्वनिपातः अपूर्वनिपातः तस्मिन् अपूर्वनिपाते, नञ्तत्पुरुषः। एकविभक्ति प्रथमान्त पद, च अव्यय, अपूर्वनिपाते सप्तम्यन्त पद। त्रिपदात्मक सूत्र है। "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" सूत्र से समासे तथा उपसर्जनम् की अनुवृत्ति हुई है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि विग्रह कि दशा में नियत विभक्ति वाले पद की उपसर्जन संज्ञा होती है और उपसर्जन संज्ञा को उद्देश्य करके होने वाले सभी कार्य होंगे किन्तु पूर्व निपात नहीं होगा।

सूत्र – गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य 1.2.48

सूत्रवृत्ति – उपसर्जनं यो गोशब्दः, स्त्री प्रत्ययान्तं च, तदन्तस्य प्रातिपदिकस्य ह्रस्वः स्यात्। अतिमालः। (वा.) अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया। अवक्रुष्टः कोकिलया– अवकोकिलः। (वा.) पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या। परिग्लानोऽध्ययनाय– पर्यध्ययनः। (वा.) निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या। निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः निष्कौशाम्बिः।

सूत्रानुवाद – उपसर्जनसंज्ञक गो शब्द और उपसर्जन स्त्री प्रत्ययान्त प्रातिपदिक को ह्रस्व होता है।

व्याख्या – गौश्च स्त्री च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वः गोस्त्रियौ, तयोः गोस्त्रियोः। गोस्त्रियोः उपसर्जनस्य द्विपदात्मक यह सूत्र है। 'गोस्त्रियोः' षष्ठ्यन्त पद, उपसर्जनस्य षष्ठ्यन्त पद है। "ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकान्तस्य" सूत्र से ह्रस्व तथा प्रातिपदिकस्य पद की अनुवृत्ति हुई है। यहाँ गो से गो शब्द तथा स्त्री पद से स्त्रियाम् सूत्र के अधिकार में विहित टाप्, डाप्, चाबादि का ग्रहण है न कि स्त्री स्वरूप का। प्रत्यय ग्रहण के कारण "प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्" परिभाषा से स्त्रीप्रत्ययान्त का ही ग्रहण होगा। इस प्रकार से सूत्र का फलितार्थ है – उपसर्जन गोशब्दान्त तथा उपसर्जन स्त्री प्रत्ययान्त प्रातिपदिक के अन्तिम "अच्" को ह्रस्व होता है।

उदाहरण – अतिमालः – मालाम् अतिक्रान्तः इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा माला अम् अति इस अलौकिक विग्रह वाक्य में "अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया"से अतिक्रमण अर्थ में विद्यमान अव्यय अति का द्वितीयान्त माला पद के साथ समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा विभक्ति लुक् करने पर माला अति इस स्थिति में "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" के द्वारा अति की उपसर्जन संज्ञा होने पर पूर्वनिपात। अति माला इस स्थिति में प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् करने पर अति माला सु इस स्थिति में "एकविभक्ति चापूर्वनिपाते" के द्वारा नियत विभक्ति वाले माला पद की उपसर्जन संज्ञा करने पर किन्तु पूर्व निपात न करने पर अति माला सु इस स्थिति में "गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य" से उपसर्जन संज्ञक माला के अन्तिम "अच्" को ह्रस्व करने पर अति माल सु इस स्थिति में सु का अनुबन्ध लोप तदनन्तर रुत्वविसर्ग करने पर "अतिमालः" रूप सिद्ध होता है।

(वा.) अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया। अवक्रुष्टः कोकिलया– अवकोकिलः।– तृतीयान्त समर्थ सुबन्त के साथ क्रुष्ट(कूजित) आदि अर्थों में विद्यमान "अव" का समास होता है। अवक्रुष्टः कोकिलया– अवकोकिलः।

(वा.) पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या। परिग्लानोऽध्ययनाय– पर्यध्ययनः। – ग्लानि आदि अर्थों में विद्यमान "परि" आदि का चतुर्थ्यन्त समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। परिग्लानोऽध्ययनाय– पर्यध्ययनः।

(वा.) निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या। निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः निष्कौशाम्बिः। – "क्रान्त" आदि अर्थों में 'निर्' आदि का पञ्चम्यन्त सुबन्त के साथ समास होता है। निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः निष्कौशाम्बिः।

सूत्र – तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् 3.1.92

सूत्रवृत्ति – सप्तम्यन्ते पदे कर्मणीत्यादौ वाच्यत्वेन स्थितं यत्कुभादितद्वाचकं पदमुपपदं स्यात्।

सूत्रानुवाद – धातोः सूत्र के अधिकार के अन्तर्गत कर्मण्यण्" आदि सूत्रों में कर्मणि सप्तमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट जो कुम्भ आदि, तद्वाचक पद की उपपदसंज्ञा होती है।

व्याख्या – सप्तम्यां तिष्ठति इति सप्तमीस्थम्। तत्र, उपपदम्, सप्तमीस्थम् यह पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। यहाँ "धातोः" का अधिकार है। सूत्रस्थ "तत्र" पद का यह तात्पर्य है कि धात्वधिकार से, सप्तमीस्थ का अर्थ है सप्तमी विभक्ति के द्वारा निर्दिष्ट। "कर्मण्यण्" इत्यादि सूत्रों में "कर्मणि" आदि सप्तम्यन्त पद आये हैं, उसमें "कुम्भ" आदि अर्थ वाच्यरूप से स्थित हैं क्योंकि वाचक पद के अन्तर्गत अर्थ वाच्यरूप में रहा करता है तथा वाचक पद अपने अर्थ में वाचकरूप में। अतः उस अर्थ का वाचक पद "कुम्भ" इत्यादि "कुम्भं करोतीति कुम्भकारः इत्यादि उदाहरणों में आता है। अतएव इसकी उपपद संज्ञा होती है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ अर्थ यह है कि धातु अधिकार में सप्तमी-विभक्ति से निर्दिष्ट पद उपपद संज्ञक होता है अर्थात् सप्तम्यन्त "कर्मणि" इत्यादि में वाच्य रूप से स्थित जो कुम्भादि उसके वाचक पद की उपपद संज्ञा होती है।

सूत्र – उपपदमतिङ् 2.2.19

सूत्रवृत्ति – उपपदं सुबन्तं समर्थेन नित्यं समस्यते, अतिङन्तश्चायं समासः। कुम्भं करोति इति कुम्भकारः। अतिङ् किम्? मा भवान् भूत, माङि लुङिति सप्तमीनिर्देशात् माङुपपदम्। (वा.) गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः। व्याघ्री। अश्वक्रीती। कच्छपीत्यादि।

सूत्रानुवाद – उपपदसंज्ञक सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य से समास होता है। तिङ् भिन्नों का ही यह समास है। अर्थात् तिङन्त के साथ समास नहीं होगा।

व्याख्या – उपपदम्, अतिङ् यह पदच्छेद है। द्विपदात्मक सूत्र है। "सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे" सूत्र से सुप् की तथा "नित्यं क्रीडाजीविकयोः" सूत्र से नित्यम् पद की अनुवृत्ति हुई है। समर्थः, समासः तथा तत्पुरुषः का अधिकार अनुवर्तित है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ होगा कि उपपद सुबन्त का समर्थ के साथ नित्य समास होता है और वह समास अतिङन्त होता है। अर्थात् उपपद का तिङन्त भिन्न समर्थ शब्द के साथ नित्य समास होता है। यह समास भी तत्पुरुष होता है।

अतिङ् किम् ? – (सूत्र में अतिङ् का क्या प्रयोजन है यह प्रश्न का तात्पर्य है) मा भवान् भूत में समास न हो। इसमें "मा" उपपद है क्योंकि "माङि लुङिति सप्तमीनिर्देशात् माङुपपदम्"। किन्तु भूत् के तिङ् होने के कारण यहाँ समास नहीं होगा।

उदाहरण – कुम्भकारः (घड़े को बनाने वाला) – कुम्भं करोति इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा कुम्भ अम् कृ इस अलौकिक विग्रह वाक्य में कुम्भ अम् की "उपपदमतिङ्" से उपपदसंज्ञा करके कर्मण्यण् सूत्र से अण् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, वृद्धि आदि करके कृ धातु से "कार" बन जाने पर "कर्तृकर्मणोः कृति" सूत्र से कुम्भ शब्द के साथ षष्ठी विभक्ति के लगने पर द्वितीया विभक्ति की निवृत्ति हो जाती है तत्पश्चात् कुम्भ ङस् कार इस स्थिति में "उपपदमतिङ्" से समास होने पर "कृत्तद्धितसमासाश्च" सूत्र से कृदन्तत्वात् प्रातिपदिकसंज्ञा करके सुब्लुक् करके कुम्भकार बन जाता है। इस अवस्था में एकदेशविकृतन्यायेन कुम्भकार को प्रातिपदिक मानकर स्वादि प्रत्ययों के विधानोत्तर कुम्भकारः रूप सिद्ध हुआ।

(वा.) गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः। – गति, कारक, और उपपद का कृदन्तपदों के साथ समास सुब् उत्पत्ति से पहले हो जाता है। व्याघ्री। अश्वक्रीती। कच्छपीत्यादि।

उदाहरण – व्याघ्री – व्याजिघ्रति इस विग्रह में तथा वि आ पूर्वक घ्रा धातु से "आतश्चोपसर्गे" सूत्र से "क" प्रत्यय करने पर तथा व्या का घ्रा के साथ समास सुप् उत्पत्ति से पूर्व ही हो जाता है तत्पश्चात् "व्याघ्र" शब्द के जातिवाचक होने के कारण "जातेरस्त्रीविषयाद् अयोपधात्" सूत्र से ङीष् प्रत्यय होकर सुप् उत्पत्ति करके "हल्ङ्याभ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्" सूत्र के द्वारा सुप् का लुक् करने पर "व्याघ्री" रूप बनता है।

इसी प्रकार कारक समास का उदाहरण है – अश्वक्रीती अश्वेन क्रीता। उपपद समास का उदाहरण है– कच्छपी कच्छेन पिबति।

सूत्र – तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः 5.4.86

सूत्रवृत्ति – संख्याव्ययादेरङ्गुल्यन्तस्य समासान्तः अच् स्यात्। द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य द्व्यङ्गुलम्। निर्गतमङ्गुलिभ्यः निरङ्गुलम्।

सूत्रानुवाद – संख्यावाचक शब्द या अव्ययशब्द जिसके आदि में हों तथा अंगुलिशब्द जिसके अन्त में हो, ऐसे समाससंज्ञक तत्पुरुष को समासान्त अच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – संख्या च अव्ययं च तयोः समाहारद्वन्द्वः, संख्याव्ययम्, संख्याव्ययम् आदिः यस्य स संख्याव्ययादिः तस्य। तत्पुरुषस्य, अङ्गुलेः, संख्याव्ययादेः यह पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। "अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः" सूत्र से अच् की अनुवृत्ति हुई है। ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समासान्ताः, प्रत्ययः, परश्च सूत्रों का अधिकार है। अङ्गुलेः यह "तत्पुरुष" का विशेषण है अतः येन विधिस्तदन्तस्य के द्वारा तदन्त विधि होकर "अङ्गुल्यन्तस्य तत्पुरुषस्य" अर्थ मिल जाता है। इसी प्रकार संख्याऽव्ययादेः पद का भी तत्पुरुष के साथ अन्वय होगा। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ होगा कि

संख्यावाचक और अव्ययवाचक शब्द जिस तत्पुरुष के आदि में तथा अंगुली शब्द के अन्त में हो उस तत्पुरुष से परे समासान्त "अच्" प्रत्यय होता है।

सूत्र – अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः 5.4.87

सूत्रवृत्ति – एभ्यो रात्रेरच् स्यात् चात्सङ्ख्याव्ययादेः। अहर्ग्रहणं द्वन्द्वार्थम्।

सूत्रानुवाद – अहन्, सर्व, एकदेशवाचक, सङ्घात और पुण्य इन शब्दों से तथा चकारात् संख्यावाचक एवं अव्यय शब्दों से परे भी जो रात्रि शब्द, उससे समासान्त अच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – अहश्च सर्वश्च एकदेशश्च संख्यातश्च पुण्यञ्च तेषां समाहारः अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्यम्, तस्मात्। अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्यात्, च, रात्रेः यह त्रिपदात्मक सूत्र है। 'अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्यात्' पञ्चम्यन्त पद है 'च' अव्यय 'रात्रेः' षष्ठ्यन्त पद है। "तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः" सूत्र से तत्पुरुष की अनुवृत्ति है, "अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः" सूत्र से अच् की अनुवृत्ति हुई है। ङ्याप्प्रातिपदिकात्, तद्धिताः, समासान्ताः, प्रत्ययः, परश्च सूत्रों का अधिकार है। चकार से पूर्व सूत्र से "संख्याव्ययादेः" पद का ग्रहण होता है। रात्रेः पद तत्पुरुष का विशेषण है अतः तदन्त विधि के द्वारा रात्र्यन्तस्य तत्पुरुषस्य अर्थ प्राप्त होता है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि अहन्, सर्व, एकदेशवाचक, संख्यात और पुण्य इन शब्दों के परे जो रात्रिशब्द, तदन्त तत्पुरुष से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। अहन् का ग्रहण द्वन्द्व समास के लिए हुआ है क्योंकि अहन् शब्द से परे रात्रि शब्द द्वन्द्व समास में ही संभव है।

सूत्र – रात्राह्नाहाः पुंसि 2.4.29

सूत्रवृत्ति – एतदन्तौ द्वन्द्वतत्पुरुषौ पुंस्येव। अहश्च रात्रिश्चाहोरात्रः। सर्वरात्रः। संख्यातरात्रः। **वा0 – संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबं।** द्विरात्रम्। त्रिरात्रम्।

सूत्रानुवाद – यदि द्वन्द्व तथा तत्पुरुष के अन्त में रात्र, अह्न और अह शब्द हों तो वे पुंल्लिंग में ही होते हैं।

व्याख्या – रात्रश्च अह्नश्च अहन् च तेषामितरेतरद्वन्द्वः रात्राह्नाहाः। रात्राह्नाहाः, पुंसि यह सूत्र का पदच्छेद है। द्विपदात्मक यह सूत्र है। रात्राह्नाहाः प्रथमान्त पद है, पुंसि सप्तम्यन्त पद है। द्वन्द्वतत्पुरुषयोः पद की अनुवृत्ति हुई है तदन्तर उसका विभक्ति परिणाम होकर द्वन्द्वतत्पुरुषौ बन जाता है। रात्राह्नाहाः द्वन्द्व तत्पुरुषौ का विशेषण है अतः तदन्तविधि के द्वारा "रात्राह्नाहान्तौ द्वन्द्वतत्पुरुषौ" बन जाता है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि रात्र, अह्न, अहन् अन्त वाले शब्द द्वन्द्व और तत्पुरुष-समास में पुंल्लिंग ही होते हैं। अहोरात्रः, सर्वरात्रः, संख्यारात्रः आदि उदाहरण है।

सूत्र – राजाहः सखिभ्यष्टच् 5.4.91

सूत्रवृत्ति – एदन्तात्तत्पुरुषात् टच् स्यात्। परमराजः।

सूत्रानुवाद – राजन्, अहन्, और सखि अन्त में हो, ऐसे शब्दों से समास हो जाने के बाद समास के अन्त्यावयव के रूप में टच् प्रत्यय होता है।

व्याख्या – राजा च अहश्च सखा च तेषामितरेतरद्वन्द्वः राजाहःसखायस्तेभ्यः। राजाहःसखिभ्यः, टच् यह द्विपदात्मक सूत्र है। राजाहःसखिभ्यः पञ्चम्यन्त पद है, टच् प्रथमान्त पद है। राजाहःसखिभ्यः तत्पुरुषात् का विशेषण है अतः तदन्तविधि होकर राजन् अहन् सखि– इत्येदन्तात् तत्पुरुषात् अर्थ प्राप्त होता है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ अर्थ है कि राजन्, अहन्, और सखि– ये शब्द जिसके अन्त में होते हैं ऐसे तत्पुरुष समास से परे टच् प्रत्यय हो जाता है और वह समास का ही अन्तावयव होता है।

उदाहरण – परमराजः – परमश्चासौ राजा इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा परम् सु राजन् सु इस अलौकिक विग्रह वाक्य में विशेषणं विशेष्येण बहुलम् से समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा तथा सुप् लुक् होने पर परम की उपसर्जन संज्ञा होने पर पूर्व निपात करके परमराजन् बना। इस स्थिति में "राजाहःसखिभ्यष्टच्" सूत्र के द्वारा टच् करने पर परमराजन् अ इस स्थिति में "नस्तद्धिते" सूत्र से टिसंज्ञक अन् का लोप करने पर परमराज् अ इस स्थिते में वर्ण संयोग करके परमराज बना तदन्तर सुबादि उत्पत्ति करने पर परमराजः रूप सिद्ध हुआ।

सूत्र – आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः 6.3.46

सूत्रवृत्ति – महत आकारोन्तोऽदेशः स्यात् समानाधिकरणे उत्तरपदे, जातीये च परे। महाराजः। प्रकारवचने जातीयर्। महाप्रकारो महाजातीयः।

सूत्रानुवाद – समानाधिकरण उत्तर पद तथा जातीय प्रत्यय के परे होने पर "महत्" शब्द को आकार अन्तादेश होता है।

व्याख्या – समानाधिकरणं च जातीयश्च तयोः इतरेतरद्वन्द्वः समानाधिकरणजातीयौ, तयोः समानाधिकरणजातीययोः। आत्, महतः, समानाधिकरणजातीययोः यह सूत्र का पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। अलुगुत्तरपदे सूत्र से उत्तरपदे पद की अनुवृत्ति होती है। उत्तरपद का अन्वय केवल समानाधिकरणे के साथ है जातीयर् के साथ नहीं। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है कि महत् शब्द के स्थान पर आकारादेश हो जाता है यदि समानाधिकरण उत्तर पद परे हो या जातीयर् प्रत्यय परे हो तो। "अलोऽन्त्यस्य" के द्वारा अन्त के स्थान पर आदेश प्राप्त होगा यह अर्थ प्राप्त हुआ है।

उदाहरण – महाराजः – महान् च असौ राजा इस लौकिक विग्रह वाक्य में महान् तथा राजा का समानाधिकरण समास होकर महत् राजन् रूप बन जाने पर प्रकृत सूत्र से त् के स्थान पर आ होकर मह आ राजन् बन जाने पर "राजाहः सखिभ्यष्टच्" सूत्र के द्वारा टच् करने पर महाराजन् अ इस स्थिति में "नस्तद्धिते" सूत्र से टिसंज्ञक अन् का लोप करने पर महाराज् अ इस स्थिते में वर्ण संयोग करके महाराज बना तदन्तर सुबादि उत्पत्ति करके महाराजः रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः 6.3.47

सूत्रवृत्तिः – आत् स्यात्। द्वौ च दश च द्वादश। अष्टाविंशतिः।

सूत्रानुवाद – बहुव्रीहि समास में तथा "अशीति" शब्द परे न हो तो संख्यावाचक उत्तरपद रहने पर द्वि और अष्टन के स्थान पर आकार अन्तादेश होता है।

व्याख्या – द्वौ च अष्टौ च तयोः समाहारद्वन्द्वः द्वयष्टन, तस्मात् द्वयष्टनः। बहुव्रीहिश्च अशीतिश्च तयोरितरेतरद्वन्द्वो बहुव्रीह्यशीती, तयोः बहुव्रीह्यशीत्योः। न बहुव्रीह्यशीत्योः अबहुव्रीह्यशीत्योः। द्वयष्टनः, संख्यायाम्, अबहुव्रीह्यशीत्योः यह सूत्र का पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। अलुगुत्तरपदे सूत्र से उत्तरपदे पद की अनुवृत्ति होती है। उत्तरपदे का संबंध संख्यायाम् तथा अशीत्याम् पद के ही साथ केवल है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ होता है कि द्वि तथा अष्टन् शब्द के स्थान पर आकारदेश है संख्यावाचक उत्तरपद पर में हो तो किन्तु यह कार्य बहुव्रीहि तथा अशीति पद में नहीं होगा। "अलोऽन्त्यस्य" के द्वारा अन्त के स्थान पर आदेश प्राप्त होगा यह अर्थ प्राप्त हुआ है।

उदाहरण – **द्वादश** – द्वौ च दश च इस लौकिक विग्रह वाक्य में तथा द्वि औ दशन् जस् इस अलौकिक विग्रह वाक्य में चार्थे द्वन्द्वः से द्वन्द्व समास, प्रातिपदिक संज्ञा, सुप् का लुक् होकर अल्प अच् वाले द्वि का पूर्व प्रयोग करने पर द्विदशन् में द्वयष्टनः संख्यायाम० इत्यादि सूत्र से द्वि के इकार के स्थान पर आकार आदेश होकर द्वादशन् बना। यह बहुवचनान्त ही होता है अतः जस् का विधान हुआ है। तत्पश्चात् "ष्णान्ता षट्" के द्वारा द्वादशन् की षट्संज्ञा होने पर षड्भ्यो लुक् से जस् का लुक् करके द्वादशन् बना। "नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य" से नकार का लोप होने पर द्वादश रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – त्रेस्त्रयः 6.3.48

सूत्रवृत्ति – त्रयोदशः। त्रयोविंशतिः। त्रयस्त्रिंशत्।

सूत्रानुवाद – त्रि-शब्द के स्थान पर त्रयस् आदेश होता है, संख्यावाचक शब्द के उत्तरपद में रहते किन्तु यह कार्य बहुव्रीहिसमास एवं अशीति शब्द के परे रहते नहीं होता।

व्याख्या – त्रेः, त्रयः यह सूत्र का पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। त्रेः षष्ठ्यन्त पद है, त्रयः प्रथमान्त पद है। "द्वयष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः" से संख्यायाम् और अबहुव्रीह्यशीत्योः एवं "अलुगुत्तरपदे" से उत्तरपदे की अनुवृत्ति आती है। इस प्रकार से सूत्र का फलितार्थ सिद्ध होता है कि – त्रि-शब्द के स्थान पर त्रयस् आदेश होता है, संख्यावाचक शब्द के उत्तरपद में रहते परन्तु यह कार्य बहुव्रीहिसमास एवं अशीति शब्द के परे रहते नहीं होता है।

सूत्र – परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः 2.4.26

सूत्रवृत्ति – एतयोः परपदस्येव लिङ्गं स्यात्। कुक्कुटमयूर्याविमे। मयूरीकुक्कुटाविमौ। अर्धपिप्पली। (द्विगुप्राप्तापन्नलम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः) पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः पञ्चकपालः पुरोडाशः।

सूत्रानुवाद – द्वन्द्व तथा तत्पुरुष समास का लिंग उस समास के उत्तर के लिंग के समान होता है।

व्याख्या – परस्य इव परवत्। द्वन्द्वश्च तत्पुरुषश्च द्वन्द्व तत्पुरुषौ, तयोः द्वन्द्वतत्पुरुषयोः। परवत्, लिङ्गम्, द्वन्द्वतत्पुरुषयोः यह सूत्र का पदच्छेद है। त्रिपदात्मक यह सूत्र है। इस सूत्र के द्वारा समास में लिंग निर्धारण होता है।

उदाहरण – कुक्कुटमयूर्यौ – कुक्कुटश्च मयूरी च इस विग्रह में द्वन्द्व समास होकर "कुक्कुट मयूरी" रूप बनता है। यहाँ उत्तर पद में मयूरी है और वह स्त्रीलिंग है अतः "परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" सूत्र से समस्त पद स्त्रीलिंग में होगा इस प्रकार से कुक्कुटमयूर्यौ रूप सिद्ध होता है।

(वा.) द्विगुप्राप्तापन्नलम्पूर्वगतिसमासेषु प्रतिषेधो वाच्यः। द्विगु समास, प्राप्त, आपन्न, और अलंपूर्वक समास तथा गति समास में पर शब्द के समान लिंग नहीं होता है। पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः पञ्चकपालः पुरोडाशः।

सूत्र – प्राप्तापन्ने च द्वितीयया 2.2.4

सूत्रवृत्ति – समस्येते। अकारश्चानयोरन्तादेशः। प्राप्तो जीविकां प्राप्तजीविकः। आपन्नजीविकः। अलं कुमार्यै– अलंकुमारिः। अतएव ज्ञापकात् समासः। निष्कौशाम्बिः।

सूत्रानुवाद – प्राप्त और आपन्न सुबन्तों का द्वितीयान्त सुबन्त के साथ समास होता है। इसको भी तत्पुरुष कहा जाता है।

व्याख्या – प्राप्तम् आपन्नं च तयोः इतरेतरद्वन्द्वः प्राप्तापन्ने। समासः, सुप्, सह सुपा, तत्पुरुषः, विभाषा अन्यतरस्याम् आदि पदों की अनुवृत्ति तथा अधिकार है। यह सूत्र द्वितीया श्रितातीतपतित० इत्यादि सूत्र का अपवाद सूत्र है।

सूत्र – अर्धर्चाः पुंसि च 2.4.31

सूत्रवृत्ति – अर्धर्चादयः शब्दाः पुंसि क्लीबे च स्युः। अर्धर्चः। अर्धर्चम्। एवं ध्वज-तीर्थ-शरीर-मण्डप-यूप-देहाङ्कुश-पात्र-सूत्रादयः। सामान्ये नपुंसकम्। मृदु पचति। प्रातः कमनीयम्।

सूत्रानुवाद – अर्धर्च आदि गण में पठित सभी शब्द पुंल्लिंग तथा नपुंसकलिंग दोनों में होते हैं।

व्याख्या – अर्धर्चाः, पुंसि, च यह सूत्र का पदच्छेद है। यह त्रिपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में अर्धं नपुंसकम् से नपुंसकम् की अनुवृत्ति हुई है। अर्धर्चादि एक गण है जिसमें अर्धर्च, गोमय, कषाय आदि शब्द आते हैं।

उदाहरण – "अर्धम् ऋचः" इस विग्रह में समास होकर अर्धर्च रूप बनने पर पुंल्लिंग में अर्धर्चः तथा नपुंसकलिंग अर्धर्चम् रूप बनता है। इसी प्रकार गोमय आदि शब्दों के भी रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं।

11.3 कतिपय उदाहरणों की रूपसाधन-प्रक्रिया

प्राचार्यः – प्रगतः आचार्यः इस अर्थ में प्र आचार्य सु इस अलौकिक विग्रहवाक्य से "प्रादयः गताद्यर्थे प्रथमया" से गतादि अर्थ में समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् "प्रथमानिर्दिष्टं समास

उपसर्जनम्" से प्र की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, तब प्र आचार्य रूप बना "अकः सवर्णे दीर्घः" से सवर्णे दीर्घ हुआ, स्वादि-उत्पत्ति होने से प्राचार्यः रूपसिद्ध हुआ।

सुपुरुषः – शोभनः पुरुषः इस अर्थ की विवक्षा में सु पुरुष सु इस दशा में "कुगतिप्रादयः" से समास हुआ। अवशिष्ट सुबादि उत्पत्ति प्रक्रिया पूर्ववत् होती है।

अवकोकिलः – अवक्रुष्टः कोकिलया इस अर्थ मे अव कोकिला टा इस अलौकिक विग्रहवाक्य से "अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया" इस वार्तिक से तृतीयार्थ समर्थसुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से अव की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ अव कोकिला इस स्थिति में स्वादि-उत्पत्ति होने से अवकोकिला रूपसिद्ध हुआ।

पर्यध्ययनः – ग्लानः अध्ययनाय इस अर्थ मे परि अध्ययन ङे इस अलौकिक विग्रहवाक्य से "पर्यादयः ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या" इस वार्तिक से चतुर्थ्यर्थ समर्थसुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से परि की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, तब परि अध्ययन हुआ, स्वादि-उत्पत्ति होने से पर्यध्ययनः रूपसिद्ध हुआ।

निष्कौशाम्बिः – निष्क्रान्त्याः कौशाम्ब्याः इस अर्थ मे निर् कौशाम्बी इस अलौकिक विग्रहवाक्य से "निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या" इस वार्तिक से चतुर्थ्यर्थ समर्थसुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से निर् की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, तब निर् कौशाम्बी ये रूप बना, "एकविभक्ति चापूर्वनिपाते" से कौशाम्बी की उपसर्जन संज्ञा हुई। "गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य" स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द की अन्तिम अच् के स्थान पर ह्रस्व इकार हुआ। तब खरवसानादि सूत्र से विसर्ग होने के पश्चात् "इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य" सूत्र से षकारादेश होने पर निष् कौशाम्बि बना, स्वादि-उत्पत्ति होने से निष्कौशाम्बिः रूप सिद्ध हुआ।

कच्छपी – कच्छेन पिबति इस अर्थ मे "सुपिस्थः" इस सूत्र से क प्रत्यय हुआ। कच्छ टा पा क इस अलौकिक विग्रहवाक्य की दशा में "उपपदमतिङ्" से समास हुआ "कृतद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः "से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, "जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्" से ङीष् प्रत्यय होने से कच्छपी रूप सिद्ध होगा।

द्वयङ्गुलम् – द्वे अङ्गुली प्रमाणम् अस्य इस अर्थ में द्वि औ अङ्गुलि औ इस अलौकिक विग्रहवाक्य की दशा में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" संख्यावाचक अङ्गुलि सुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से द्वि की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, "प्रमाणे लो

द्विगोर्नित्यम्" इस वार्तिक से उत्तर प्रमाण के अर्थ मे प्रत्यय का लुक् होता है। द्विगु समास होने के कारण मात्रच् प्रत्यय का लोप हो जाता है। प्रकृत सूत्र से अच् प्रत्यय हुआ अनुबन्धलोप होने से, "यचि भम्" से भ संज्ञा, यस्येति च सूत्र से भसंज्ञक इकार का लोप हुआ। स्वादि-उत्पत्ति होने से अदन्त सुबन्त को अम् आदेश हुआ, अमिपूर्वः से पूर्व रूप होने द्वयङ्गुलं रूप सिद्ध हुआ।

द्विरात्रम् – द्वयोः रात्रयोः समाहारः इस अर्थ की विवक्षा में द्वि ओस् रात्रि ओस् इस अलौकिक विग्रहवाक्य की दशा में "तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च" संख्यावाचक अङ्गुलि सुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से द्वि की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, अहस्सर्वैक0 इत्यादि सूत्र से अच् प्रत्यय हुआ, अनुबन्धलोप होने से, यचि भम् से भ संज्ञा, यस्येति च सूत्र से भसंज्ञक इकार का लोप हुआ। स्वादि-उत्पत्ति होने से सु प्रत्यय आया, यहां परवल्लिङ्गम्0 इत्यादि सूत्र से स्त्रीलिङ्ग प्राप्त था, इसका रात्रान्हाहाः पुंसि से बाध हो गया और पुंल्लिङ्ग प्राप्त हुआ, उसको बाधकर संख्यापूर्वरात्रं क्लीबम् से नपुंसक हो गया, नपुंसक होने से अदन्त सुबन्त को अम् आदेश हुआ, अमिपूर्वः से पूर्व रूप होने द्विरात्रम् रूप सिद्ध हुआ।

महाजातीयः – महान् इव इस अर्थ की विवक्षा में महत् शब्द "प्रकारवचने जातीयर्" से जातीयर् प्रत्यय-अनुबन्धलोप होने से प्रकृत सूत्र से जातीयर् प्रत्यय परे रहते महत् शब्द के अन्तिम अल् के तकार को आकारादेश प्राप्त हुआ। सवर्णदीर्घ और स्वादि/उत्पत्ति होने से सु प्रत्यय आया रुत्वविसर्ग होने से महाजातीयः रूप सिद्ध हुआ।

अलंकुमारिः – अलं कुमार्यै इस अर्थ की विवक्षा में अलं सु कुमारी ङे इस अलौकिक विग्रहवाक्य से समर्थसुबन्त के साथ समास हुआ। "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिक संज्ञा और "सुपोधातुप्रातिपदिकयोः" से सुब्लुक् हुआ और "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्" से निर् की उपसर्जन संज्ञा हुई और "उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात हुआ, तब अलं कुमारी रूप बना, "एकविभक्ति चापूर्वनिपाते" से कुमारी की उपसर्जन संज्ञा हुई। "गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य" स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द की अन्तिम अच् के स्थान पर ह्रस्व इकार हुआ। "मोनुस्वारः" से अनुस्वार हुआ, "अनुस्वारस्य" इत्यादि सूत्र से परसवर्ण हुआ पूर्ववत् स्वाद्युत्पत्ति। यहां "परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" सूत्र से स्त्रीलिङ्ग प्राप्त था, इसका प्राप्तापन्न0 इत्यादि वार्तिक से बाध हो गया और पुंल्लिङ्ग हुआ, स्वाद्युत्पति, रुत्व, विसर्ग होने से अलङ्कुमारिः रूप सिद्ध हुआ।

बोध प्रश्न

1. समुचित विकल्प का चयन कीजिए–

i. प्रादियों का समास होता है –

(क) नित्यम् (ख) अनित्य

(ग) यदा कदा (घ) कभी नहीं

ii. शुद्ध रूप है –

(क) द्विरात्रमम् (ख) द्विरात्रम्

(ग) द्विरात्रः (घ) द्विरात्रिः

iii. तस्मान्नुडचि सूत्र से कार्य होता है –

(क) नुडादेशः (ख) नुड्लोपः

(ग) नुमागमः (घ) नुडागमः

iv. राजाहःसखिभ्यष्टच् का उदाहरण है –

(क) राजपुरुषः (ख) राजसखी

(ग) परमराजः (घ) कोई नहीं

v. नपुंसक के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द है –

(क) क्लीबम् (ख) बहुलम्

(ग) वसनम् (घ) नक्तम्

2. रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए –

i. परवल्लिंगं .....पुरुषयोः।

ii. नैकधेत्यादौ तु..... सह सुप् सुपेति समासः।

iii. कुश्च गतिश्च प्रादयश्च तेषाम्.....द्वन्द्वः कुगतिप्रादयः।

iv. संख्याव्ययादेरङ्गुल्यन्तस्य समासान्तः.....स्यात्।

v. अहःसर्वैकदेश.....पुण्याच्चा रात्रेः।

3. सत्य अथवा असत्य कथन हेतु क्रमशः सही (√) या गलत (×) का चिह्न लगाइए–

i. नशब्द के साथ सुप् सुपा समास होता है – सही/गलत

ii. एकविभक्ति चापूर्वनिपाते के द्वारा पूर्व निपात का विधान होता है– सही/गलत

iii. प्रादियों का असमर्थों के साथ नित्य समास होता है – सही/गलत

iv. उपपदमतिङ् के द्वारा नित्य समास होता है – सही/गलत

v. द्वयङ्गुलम् में समासान्त अच् प्रत्यय विहित है – सही/गलत

अभ्यास प्रश्न

1. ऊरीकृत्य का लौकिक और अलौकिक विग्रह वाक्य लिखिए।
2. "नलोपो नञः" सूत्र का अर्थ लिखिए।
3. समासान्त अच् प्रत्यय विधायक सूत्र का उल्लेख कीजिए।
4. "तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्" में सप्तमीस्थ पद का क्या अभिप्राय है?
5. अतिमालः शब्द की रूपसिद्धि लिखिए।

11.4 सारांश

इस इकाई में आपने तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आने वाले नञ् समास के बारे में विस्तार से अध्ययन किया। नञ् समास से सम्बन्धित सूत्रों के उदाहरणों को स्पष्टतया जानने हेतु उन उदाहरणों के लौकिक तथा अलौकिक विग्रह वाक्यों को जानकर

उनकी रूपसाधन प्रक्रिया का अवबोध किया। इसी प्रकार इस प्रकरण के अन्तर्गत आने वाले कुछ समासान्त प्रत्ययों के बारे में भी आपने विस्तार से अध्ययन किया। "परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" इत्यादि सूत्र के माध्यम से समास में लिंग निर्धारण किस प्रकार किया जाता है कहाँ समास होने पर उत्तरपद के लिङ्ग का ग्रहण करना है और कहाँ नहीं इस प्रकार तत्पुरुष समास के लिङ्गनिर्धारण का स्पष्टतया ज्ञान प्राप्त किया।

11.5 शब्दावली

गति – "कुगतिप्रादयः" सूत्र में जो गति शब्द आया है उसका अर्थ गतिसंज्ञक है। प्रादि 22 निपात जब क्रिया से युक्त होते हैं तो उनकी "उपसर्गाः क्रियायोगे" सूत्र से उपसर्ग संज्ञा हो जाती है। उसी के साथ "गतिश्च" सूत्र से गतिसंज्ञा भी क्रियायोग में ही होती है।

प्रादयः – प्रादयः से तात्पर्य प्र, परा, अप, सम इत्यादि 22 निपातों से हैं जिनकी क्रियायोग होने पर उपसर्ग व गति संज्ञा की जाती है।

उपपद – "तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्" सूत्र से इस संज्ञा का विधान किया गया है। धातोः सूत्र के अधिकार के अन्तर्गत "कर्मण्यण्" आदि सूत्रों में कर्मणि सप्तमी विभक्ति द्वारा निर्दिष्ट जो कुम्भ आदि, तद्वाचक पद की उपपदसंज्ञा होती है। इसी प्रकार उप = समीपे उच्चारितं पदम् उपपदम् ऐसा भी अर्थ किया जाता है।

समानाधिकरण – समानम् अधिकरणं ययोः तत् समानाधिकरणम्। जिन दो पदों का अधिकरण समान होता है उन्हें समानाधिकरण कहते हैं। अर्थात् जिन दो पदों का समान विभक्ति में निर्देश होता है वे समानाधिकरण कहलाते हैं, जैसे नीलम् उत्पलम्। यहाँ दोनों पदों में समान विभक्ति का श्रवण हो रहा है।

परवल्लिंगम् – इसका प्रयोग "परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः" सूत्र में आया है। पर में अर्थात् बाद में विद्यमान पद के लिंग के जैसा लिंग होना। अर्थात् उत्तर पद जिस लिंग में है उसी लिंग को पूर्वपद के द्वारा भी प्राप्त कर लेना।

11.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी –आचार्यभीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्यासहिता (द्वितीय भाग)
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहिता
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहिता
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृतहिन्दी–व्याख्याद्वयसहिता

11.7 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. i. (क) नित्यम्, ii. (ख) द्विरात्रम्, iii. (घ) नुडागमः, iv. (ग) परमराजः, v. (क) क्लीबम्
2. i. द्वन्द्वतत्, ii. नशब्देन, iii. इतरेतर, iv. अच्, iv. संख्यात
3. i. सही, ii. गलत, iii. गलत, iv. सही, v. सही

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY